

संजय गुप्ता पेश करते हैं:

खून करेगा खून

(भोका)

● लेखक: संजय गुप्ता ● परिकल्पना: विवेक मोहन ● संपादक: मनीष गुप्ता ● चित्रांकन: कदम स्टूडियो.

अपने अस्तित्व के लिए लड़ना मजबूरी भी है और जरूरी भी!

ये अलग बात है कि कोई अपने अस्तित्व का परचम फैलाने के लिए लड़ता है ...



तो कोई अपना अस्तित्व बचाये रखने के लिए...



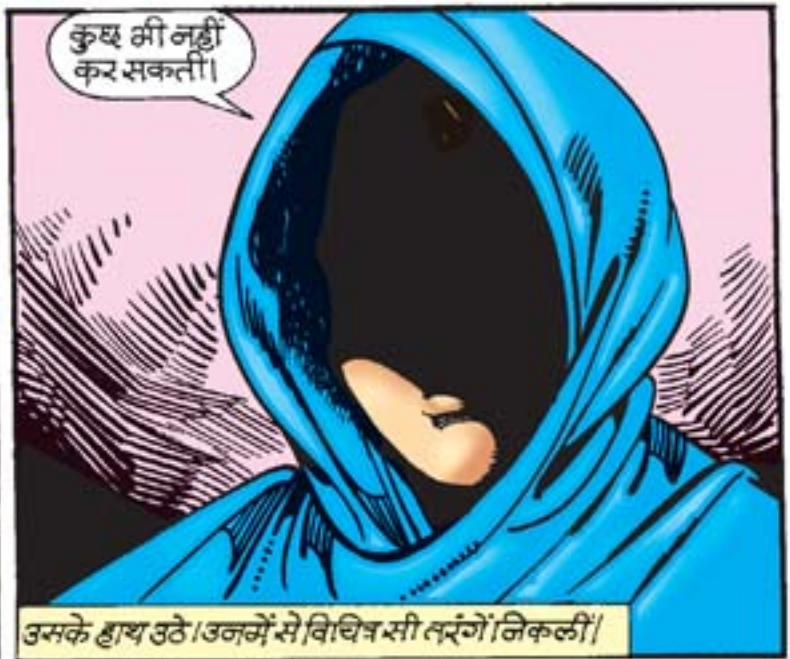
मुकाबला हमेशा आक्रमण पर भारी पड़ता है क्योंकि मुकाबला किसी के अस्तित्व को खत्म करने के लिए नहीं बल्कि अपने अस्तित्व को बचाने के लिए होता है -

विकासनगर की सेना भी यही कर रही थी इसलिए दुश्मनों में सबल बली मचने का यही कारण था-





अपनी ही शोक में कहता चला गया वह -



और अगले ही पल -

ओह, ये मेरा
घोड़ा कहां भागा
जा रहा है!

ये मेरे गज
को क्या हुआ?

और मेरा हाथी
अपने ही सैनिकों को
कुचलने को तैयार है।
बचो!

मेरा अस्त्र तो
मुझे पटककर भाग
रहा है।

ओफ़फ़!

ओह!

हिन्

विकासनगर की सेना में खलबली मच गई!

किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे।

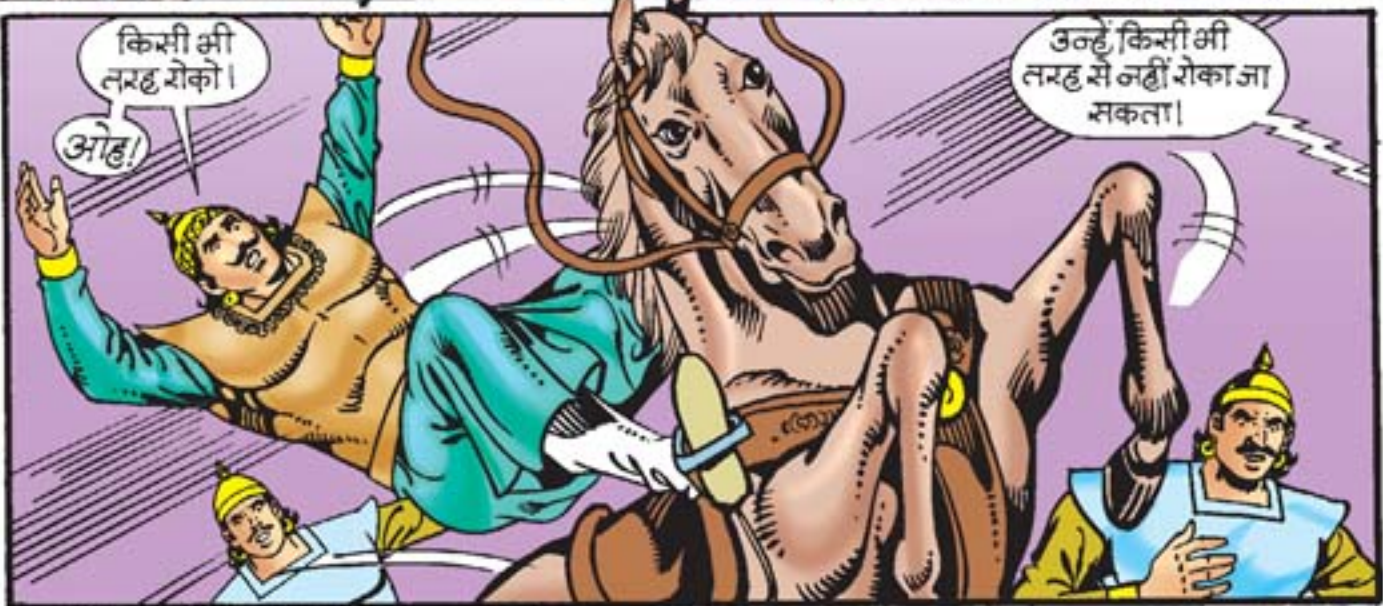
हम थोड़ा युद्ध
हार जाएंगे। अपने
हाथियों को घोड़ों को
रोको।



किसी भी
तरह रोको।

ओह!

उन्हें किसी भी
तरह से नहीं रोका जा
सकता।



विकासनगर की
पराजय की किसी भी तरह
नहीं टाला जा सकता

क... कौन
हो तुम?



वही जिसके कारण
घोड़े हाथी बेकाबू हो रहे
हैं। विकासनगर पराजय
के कगार पर खड़ा है।

विकासनगर
आज तक नहीं
हारा...





जबकि उसकी आंखों में नफरत का समुद्र लहलहा उठा -





जोश से चीखता भोकाल सैनिकों की तरफ पलटा-



भोकाल के आदेश का पालन करने में विकासनगर के सैनिक भला कहां देर लगाते हैं-





वह यहाँ था-

अगर तुममें से कोई यह समझ रहा है कि मैं भोकाल से हारकर वापस लौटा हूँ तो यह भूल है उसकी।



हारकर वापस नहीं लौटा हूँ मैं बल्कि यह सीखकर आया हूँ कि जिस क्षेत्र में भोकाल अत्यंत निपुण है उस क्षेत्र में उस पर अपनी शक्तियों का प्रयोग करने का एक ही अर्थ है भोकाल के हाथों मात खाना।



उस पर तो मुझे अपनी शक्तियों का प्रयोग बहुत ही सोच-समझकर करना होगा। इस तरह कि वह मेरी शक्तियों के जाल में फँसकर तड़पे, छटपटाए लेकिन छूट नहीं पाए।



और अब मैं ऐसा ही करने जा रहा हूँ इसलिए ...

... अब मेरे प्रकोप से किसी भी दशा में नहीं बचेगा भोकाल।





भोका लकी विचार शृंखला को भंग किया उस आवाज की स्वामिनी ने-



वैसे ही उसकी आंखों आंसुओं से भरती चली गई -

अरे तुरीन
ये क्या है? क्या
हुआ?

इसे देखकर
कपाला की याद
आ गई।

मेरी प्यारी कपाला
जाने कहां और किस
हाल में होगी।

ओह!

अब भोकाळ की भी आंखें भर आई थीं -

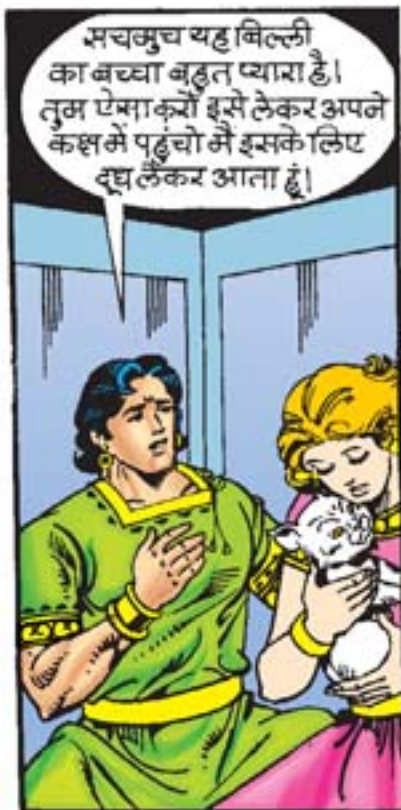
और उसका कारण भी कपाला
ही थी -

तुम्हें मात्र कपाला
की चिन्ता है, तुरीन परन्तु
मुझे कपाला के साथ-साथ
अपने पुत्र की भी चिन्ता
है, क्योंकि...

... मैंने अपनी आंखों
से कपाला को अपने पुत्र को
निगलकर गायब होते
देखा था।

जाने कहां होगा
वह और किस हाल
में होगा।

ओह! ये मैं कहां
खो गया। मुझे तुरीन को
संभालना चाहिए।



हत्यारा जब भोकाळ के सामने आया तो उसे लगा जैसे उस पर बिजलियां आ गिरी हों-

तुरीन! त... तुम रुपसी की हत्या करना चाहती हो तुरीन?



ये क्या उद्दण्डता है?



उत्तर ऐसा मिलेगा भोकाळ को इसकी कल्पना सपने में भी नहीं थी।

मुझ पर भी आक्रमण!



तुरीन रुको! मैं कहता हूँ रुको!



तुरीन नहीं रुकी-

ओपफ!

... तुरीन मुझको भी मार डालना चाहती है। आहूह!



भोकाळ का ध्यान अपने जख्म में बंट गया।

उसी का फायदा उठाकर रूपसी को दो हिस्सों में बांटने वाली थी तुरीन-



और वह ऐसा कर भी डालती-

अगर वहां पहुंची सलोनी ने उसके बार को ठीक रूपसी की गर्दन के पास नहीं रोके लिया होता...



लेकिन जबरदस्त लड़ाका तुरीन के बार को ज्यादा देर रोके रखने की हिम्मत कहाँ थी सलोनी में...



अब-



रूपसी के साथ-साथ सलोनी के प्राणों पर भी तुरीन नामक संकट मंहरा रहा था।



लेकिन यह उनकी मुशकिलमती थी कि भोकाल
वहां मौजूद था-

तुरीन के साथ
कोई बहुत बड़ी गड़बड़
हुई है!

तुरीन को
काबू में करना
होगा!



और उसके
लिए मुझे बल प्रयोग
करना होगा!



ईया!!



आहह

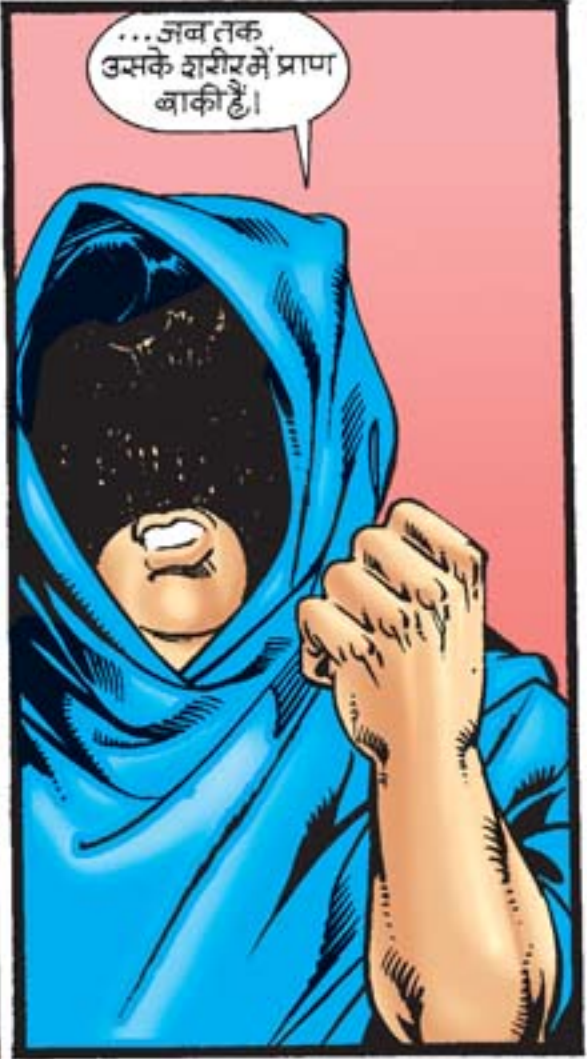


तुरीन!

इसे कुछ नहीं
हुआ। यह भाव अचेत
हुई है।

लेकिन तुरीन
बहल ने ऐसा किया
क्यों?





भोकाल के साथ-साथ विकामनगरवासियों को भी वह आभास होने जा रहा था-

क्या कह रहे हो स्वाधमंवी जी?

अ... आपकी तरह पहले मुझे भी विश्वास नहीं हुआ था परन्तु अब सब कुछ आंखों से देखा तो विश्वास आया।

आप भी अपनी आंखों से देख लीजिए महारानी जी! अन्न का सारा गोदाम खाली पड़ा है। कहीं अन्न का एक दाना भी नहीं बचा है।

ओह नहीं!

सारे का सारा अन्न चोरी हो गया है।

कौन है इस अन्न के भण्डार का चोर?



चोर भी नजर आया-

चीं



और
चोर एक नहीं, दो नहीं, सौ नहीं बल्कि...

... असंख्य थे-



चुहे!
इतने सारे
चुहे!

क...
क्या चाहते
हैं ये?



चीं

चीं

चीं





ठीक चूहों के ढेर के बीच-



भोकाल के कूदते ही सभी चूहे उसकी तरफ लपके-

इसी के साथ भोकाल चीखा-

तुम्हारे लिए
रास्ता बन गया है।
भागो यहाँ से।

ल...लेकिन
महारानी तुम!



मेरी चिन्ता मत
कीजिए महारानी जी!
आप भागिए।

चलिए
महारानी जी!



इधर सभी बने हुए रास्ते पर भाग सड़े हुए-

इधर चूहे भोकाल पर दूट पड़े-

ओप्फ! ये चूहे मेरा मांस नोच रहे हैं!



और जैसे जैसे मेरे खून और मांस की गंध दूसरे चूहों को मिल रही है वैसे वैसे...



... वे मेरी तरफ बढ़े आ रहे हैं!



अब तो इनकी संख्या इतनी अधिक हो गई है कि मैं इनके नीचे दब गया हूँ। इसलिए अब मेरे पास बचने का एक ही उपाय है कि मैं पुकारूं ...



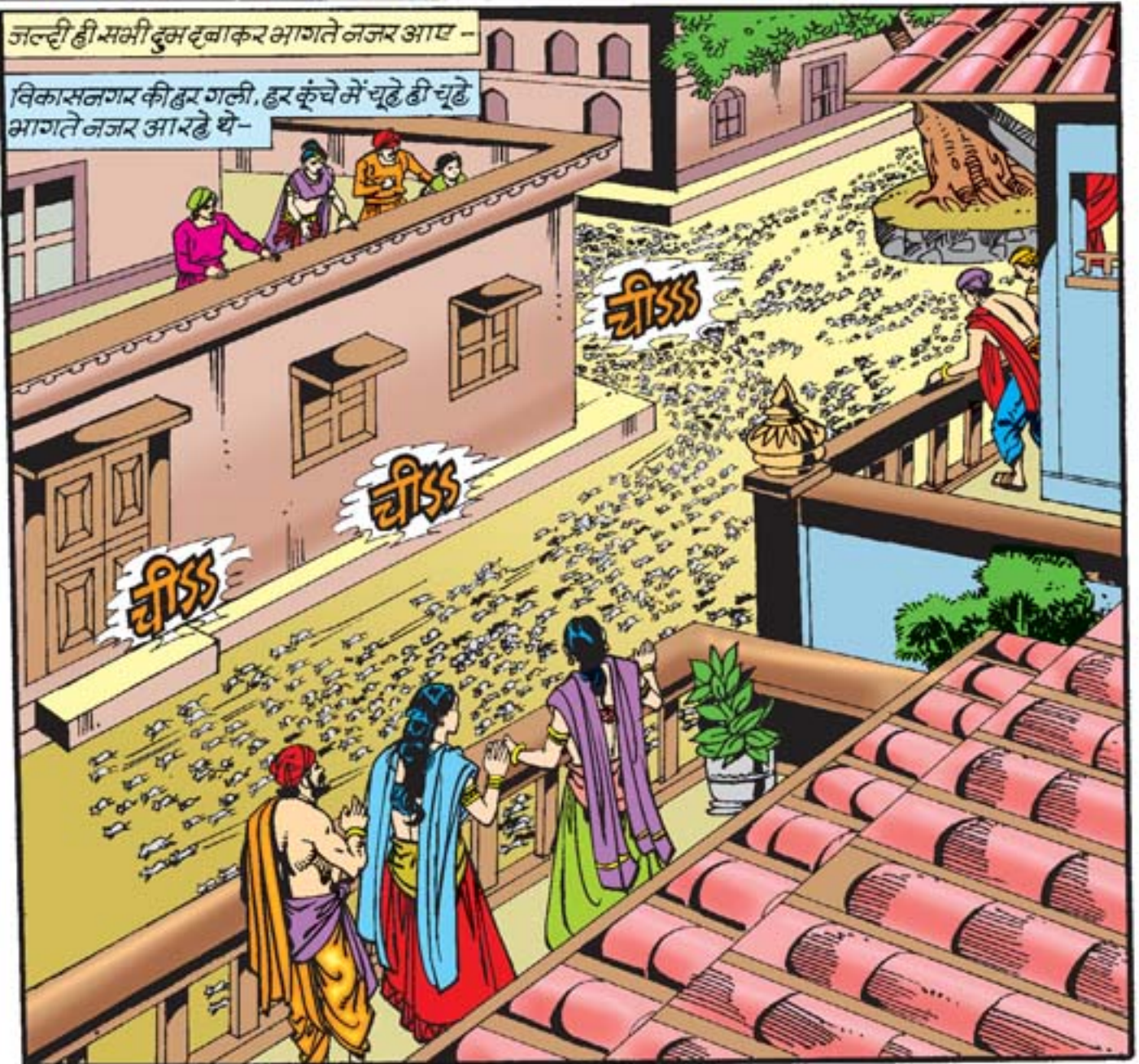


ज्वालाशक्ति ने सभी चूहों को तितर-बितर करना शुरू कर दिया-



जल्दी ही सभी दुम दबाकर भागते नजर आए-

विकासनगर की हर गली, हर कुंचे में चूहे ही चूहे भागते नजर आ रहे थे-



विकासनगर वासियों के साथ भोका ल ने भी चैन की मांस ली-

अब प्रश्न यह है कि खादूय भण्डार को खाने और उसे चुराकर ले जाने वाले इतने सारे चूहे राजधानी में कैसे पहुंचे ?

इन्हें यहां किसने पहुंचाया ?

मुझे अब भोका ल को अपनी शक्ति का ऐसा बड़ा प्रमाण देना है जो उसे मरने के लिए यहां खींच लाये...

और ऐसा होगा इन मधुमक्खियों की मदद से जो आज तक मात्र पराग कण ले जाने के लिए प्रसिद्ध हैं...

लेकिन आज ये इन इकों में मौत लेकर जाएंगी।

इन दो आंखों से बचे नहीं थे वे मौत के दूत-

लेकिन उन्हें देखकर इन आंखों में भय नहीं चिता के बादल मंडरा रहे थे-

क्या होने जा रहा था इसकी विकासनगर के किसी भी निवासी को भनक भी नहीं थी-

पहले युद्ध में हाथी और घोड़ों का बिदक जाना और अब असंख्य चूहों द्वारा खादस्य भण्डार पर हमला। कुछ समय में आया महाबली कि ये सब क्या हो रहा है ?



हां महारानी जी! काफी सोच-विचार के बाद मुझे यह लगा है कि इन सबके पीछे उस रहस्यमयी व्यक्ति का हाथ है, जो मुझे युद्धस्थल पर दिखा था!



वह ऐसा क्यों और कैसे कर रहा है इसका पता नहीं चल पाया है। परन्तु मैं शीघ्र ही उसे दूढ़ कर इसका पता लगा लूंगा।

मुझे दूढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है भोकराल...



...मैं यहीं आ गया हूं।



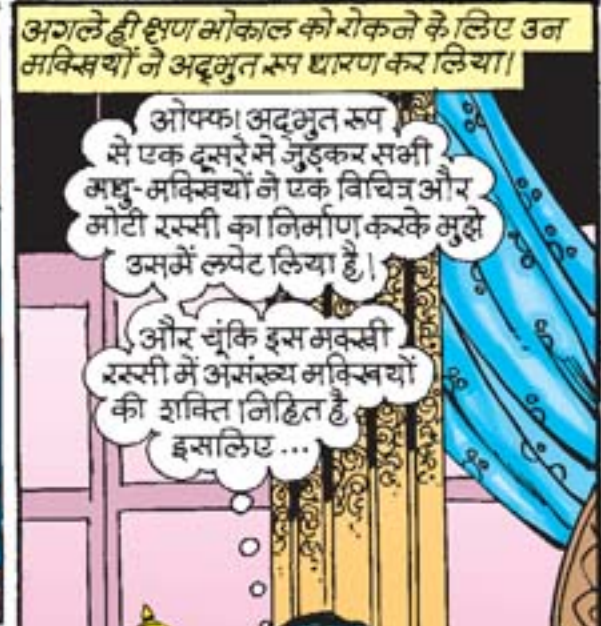
और तुम मुझे बंदी ना बना पाओ इसलिए...



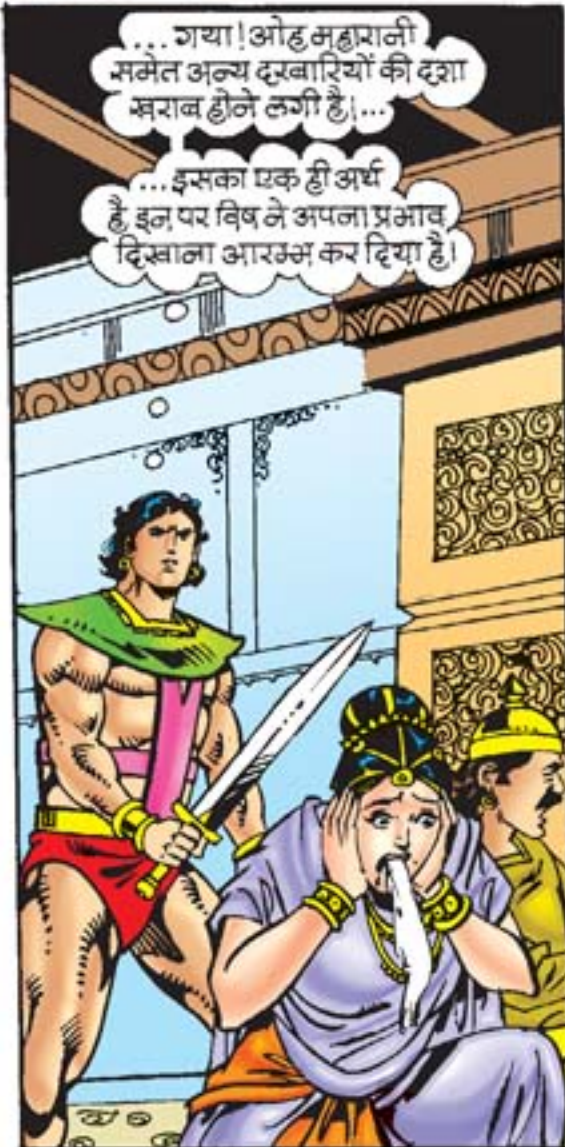


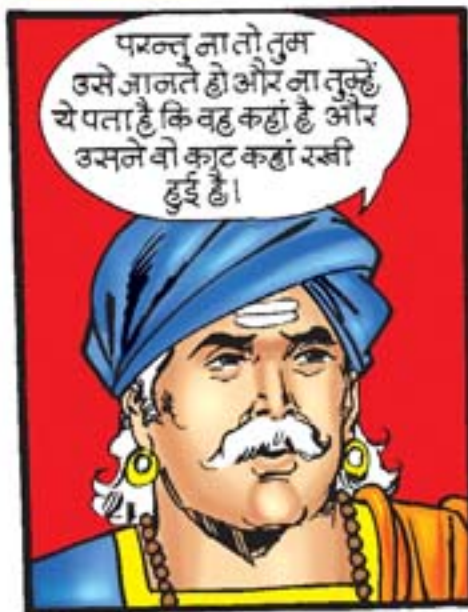












भोकाल को जल्दी ही वह रास्ता नजर आया-

वो रहा राजदरबार में
हुमला बोलने वाला मधुमक्खियों
का झुण्ड!



वह झुण्ड वहीं
लौट रहा है जहाँ से
आया था।...

भोकाल मधुमक्खियों का पीछा करके
अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रहा था-



यह बात तुरन्त ही उस शरूम तक पहुंची-

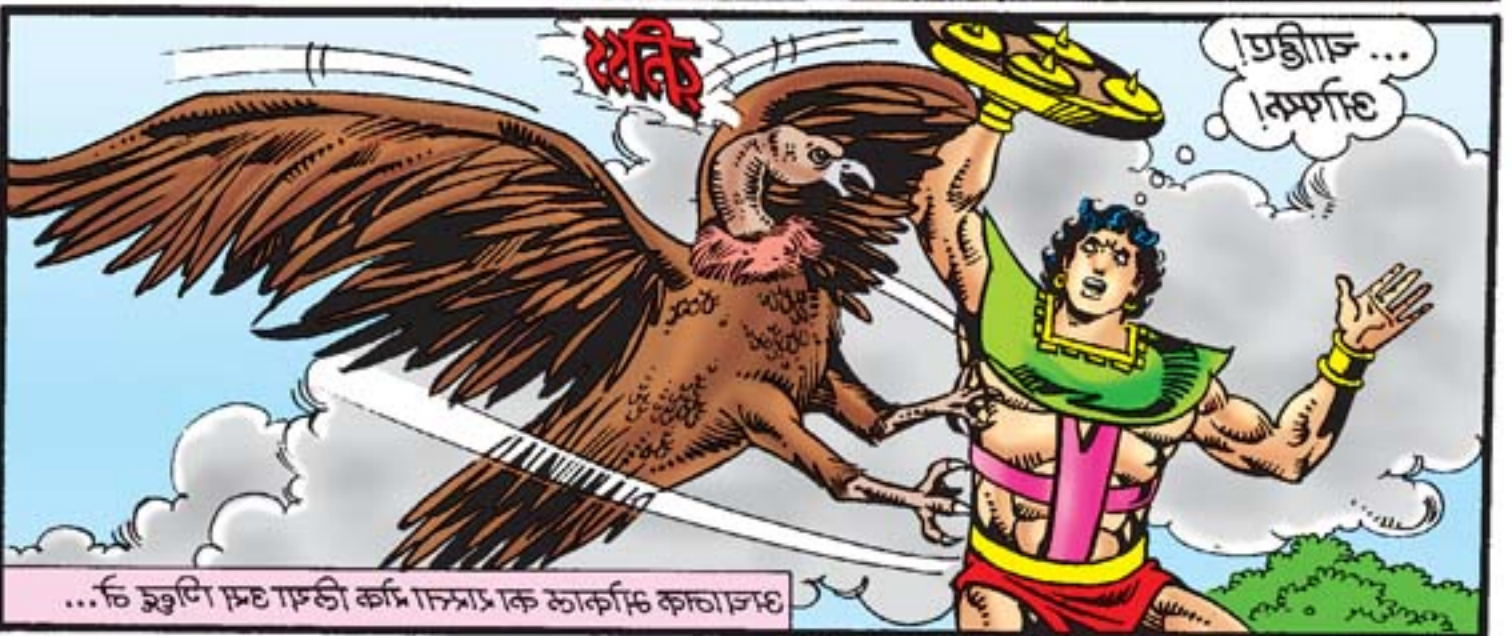


क्या कहा! भोकाल
आ रहा है। मैं जानता था
वह आएगा लेकिन वह नहीं
जानता कि वह सीधा
मृत्यु के मुँह में आ रहा
है क्योंकि...

कीस
कीस

...मैंने उसके स्वागत
की पूरी तैयारी की हुई है।







नहीं अगर मैं ऐसा करूंगा तो यह इन गिद्धों पर अन्याय होगा क्योंकि ये मुझ पर जो भी आक्रमण कर रहे हैं उसके पीछे उस शैतानी व्यक्ति का हाथ है इसलिए मुझे इनसे बचने का दूसरा रास्ता अपनाना होगा...



...और रास्ता सीधा सा है। मैं आगे बढ़ने के लिए आकाशमार्ग का रास्ता छोड़ दूँ और...

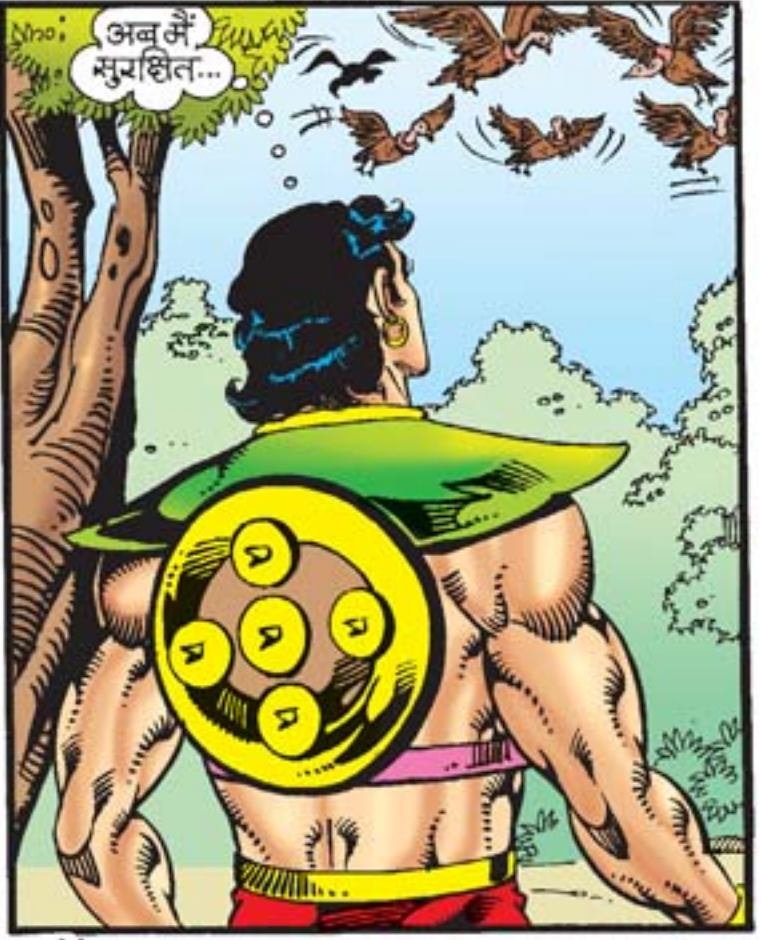


...जमीन के रास्ते का उपयोग करूँ।

...मैंने सही सोचा। गिद्ध मुझ पर आक्रमण करने के लिए नीचे नहीं आ रहे हैं।



अब मैं सुरक्षित...



...और उस वार करने वाले नेमी-

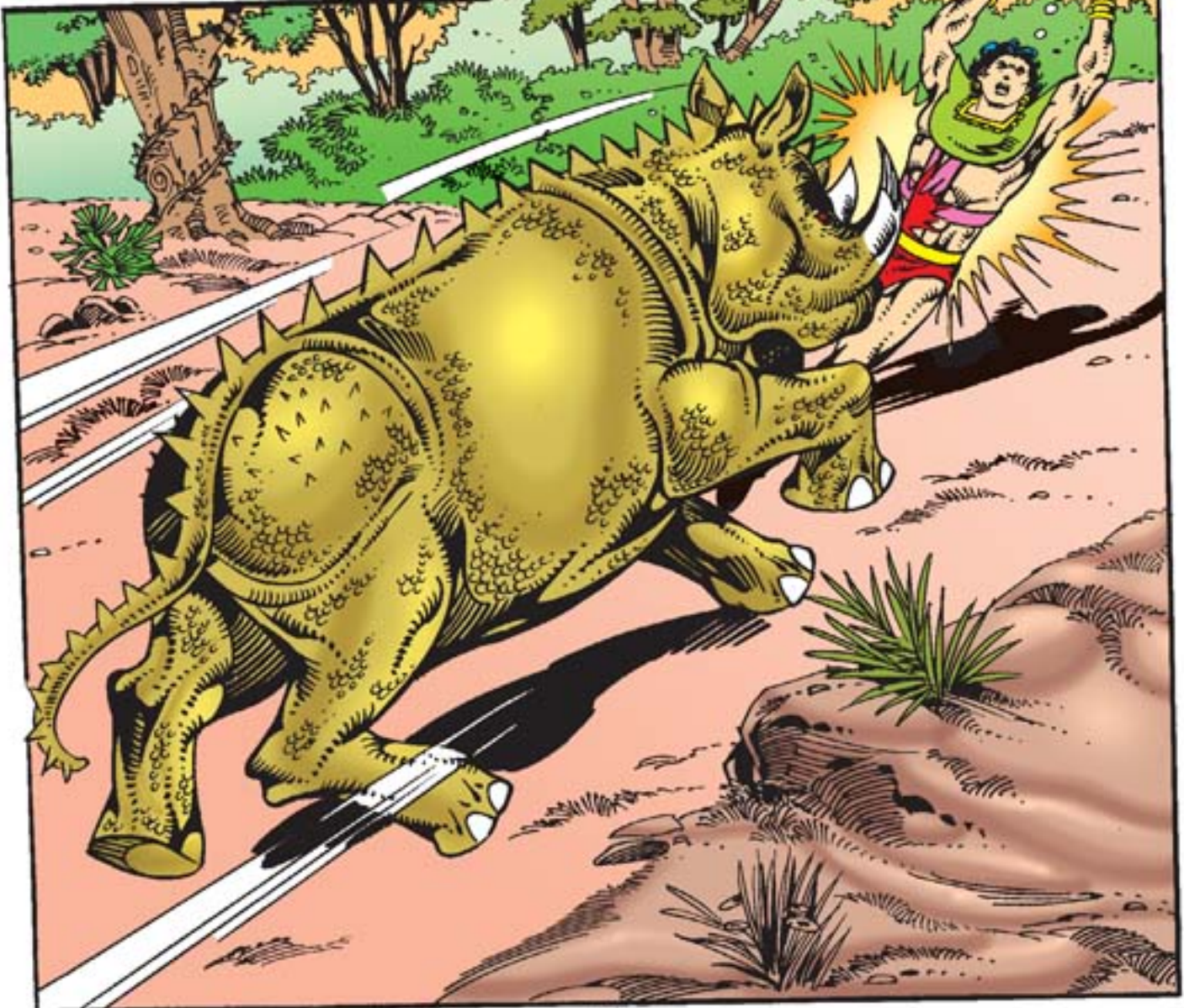


भोकाल सुगृहित
नहीं था यह बात इस वार नेमी बता दी थी...

चियांऊँ

ओह, ये
असाधारण आकार
वाला वनीय प्राणी!

... यानी इस बात
का भी प्रबंध किया हुआ है
कि मैं जमीनी रास्ते से भी आगे
ना बढ़ पाऊँ।



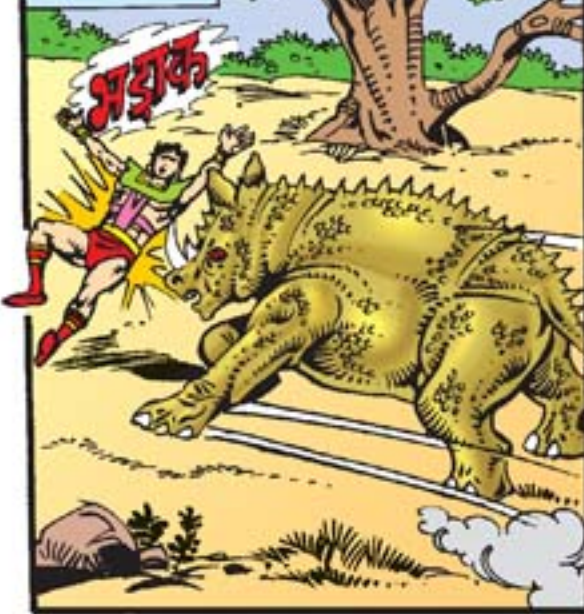


अचानक बेहद तेज पीड़ा का एक झौंका मोकाल की नस नस को चीरता चला गया-

और उस असरने मोकाल की आंखों के सामने अंधेरे की ऐसी चादर तान दी थी कि-

यह भी कि वह मौत के ठीक सामने मौजूद है...

और यह भी कि मौत के दूत ने उस पर हमला बोल दिया था-



अब-



अब भोका ल पर होने वाले हमले ने भोका ल की जान ले लेनी थी-

और जान ले ली होती अगर गरजता हुआ वह विशाल मुँह वहाँ ना पहुँचता-



और भोका ल की जान लेने वाले उस प्राणी को गड़प ना कर जाता-



अब बारी भोकाल की थी-



लेकिन भोकाल को गड़प नहीं किया उसने सिर्फ अपने दांतों के बीच में दबाया।

और-



लेकिन यह क्या ? उस विशाल जबड़े ने भोकाल को मरने के लिए खाई में छोड़ दिया।

या शायद नहीं-



नदी के ठण्डे पानी ने भोकाल को जिन्दगी का अनुभव कराया-



इसी के साथ एक झटके से भोकाल की आंखों का अंधकार दूर होता चला गया।

ओपफ! विष का प्रभाव मेरी नस नस पर हावी होता जा रहा है अगर मैं यहां शीतल जल में आकर नहीं गिरता तो शायद ही मेरी आंखें दुबारा खुल पातीं।



एक क्षण! मैं यहां आया कैसे? और उस खतरनाक वन्य प्राणी का क्या हुआ जो मुझ पर प्राणघातक हमला करने जा रहा था।

भोकाल ने अपने मस्तिष्क पर जोर डाला तो...

अगले ही क्षण उसे सब कुछ याद आता चला गया -

मैंने अपनी धुंधली आंखों से एक विशाल सिंह के मुंह को आते और उसे उस वन्य प्राणी को निगलते देखा था। फिर शायद उसी मुंह ने मुझे अपने दांतों में दबाकर यहां फेंक दिया।



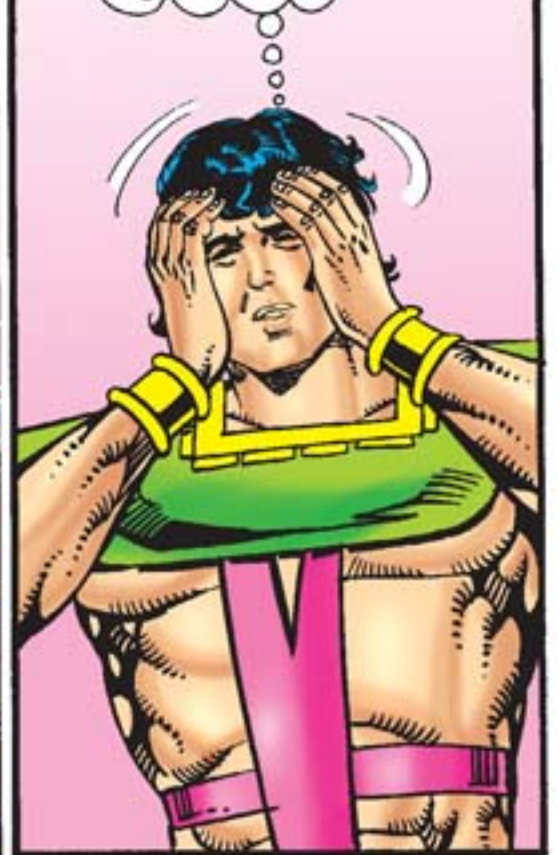
यानी वह सिंह मेरा मदद्गार था। उसी के कारण मेरे प्राण बचे हैं।

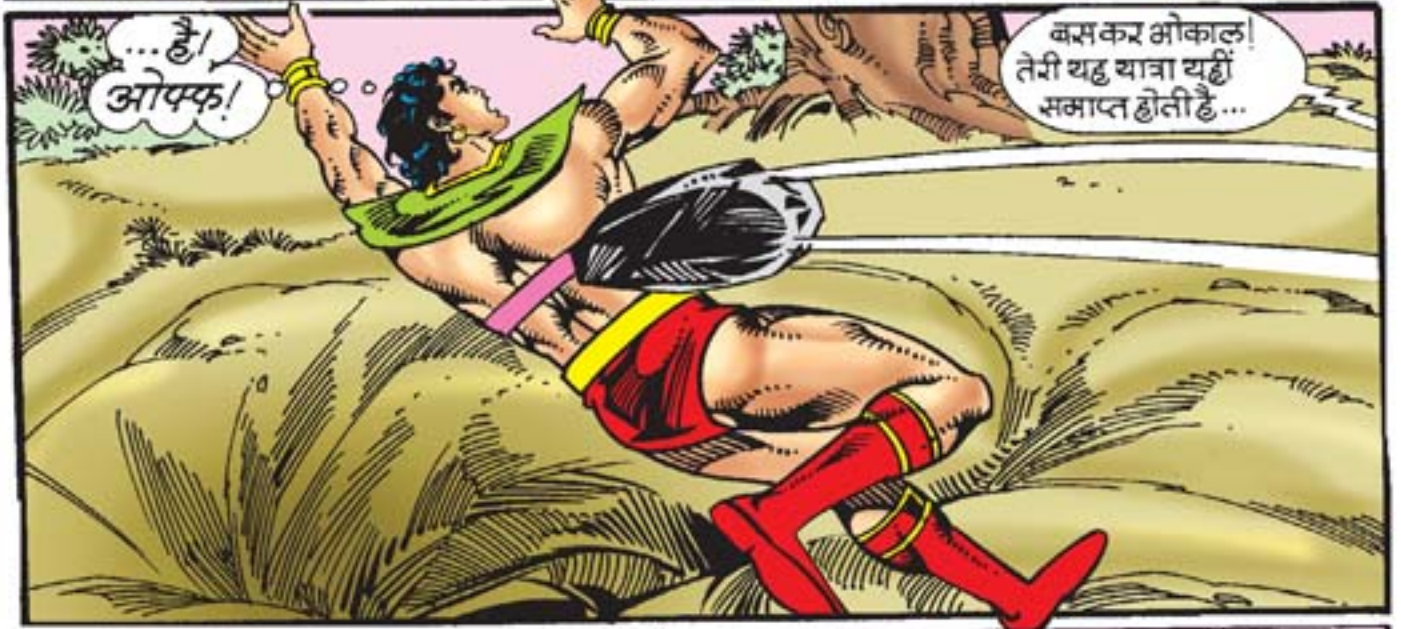
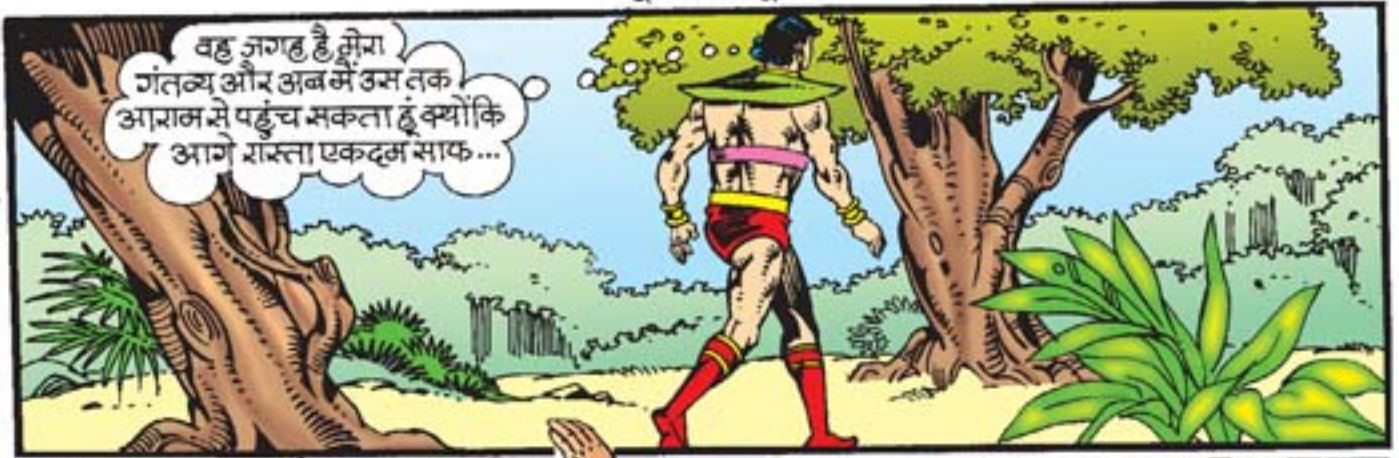
इस स्थान पर मेरी सहायता करने के लिए उस सिंह को किसने भेजा था?

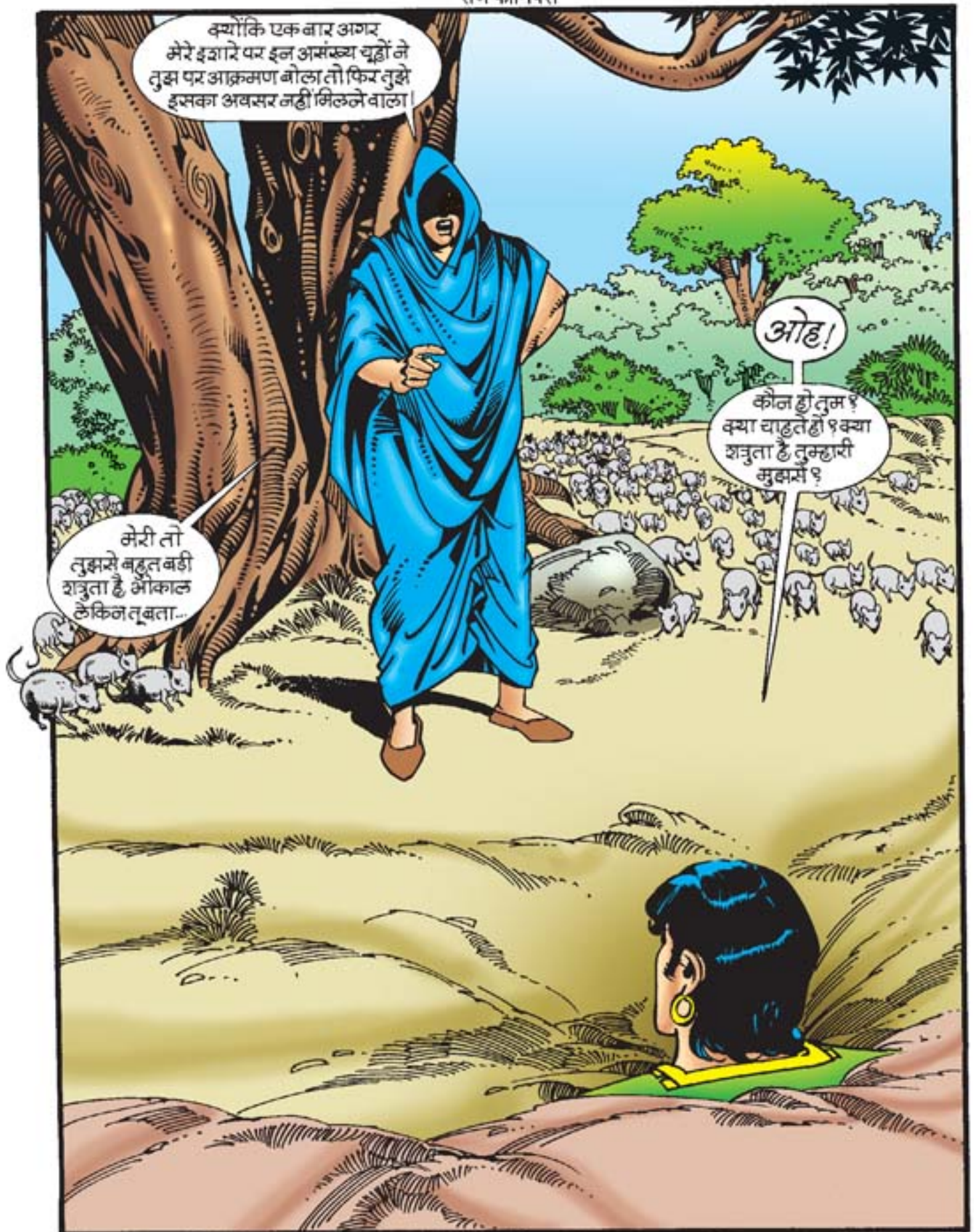


भोकाल ने जल्दी ही अपने आपको उस विचार भंवर से बाहर निकाला -

मेरे पास अधिक समय नहीं है। विष किसी भी समय मेरे प्राण हर सकता है। इसलिए मुझे शीघ्र अतिशीघ्र अपने गंतव्य पर पहुंचना चाहिए।







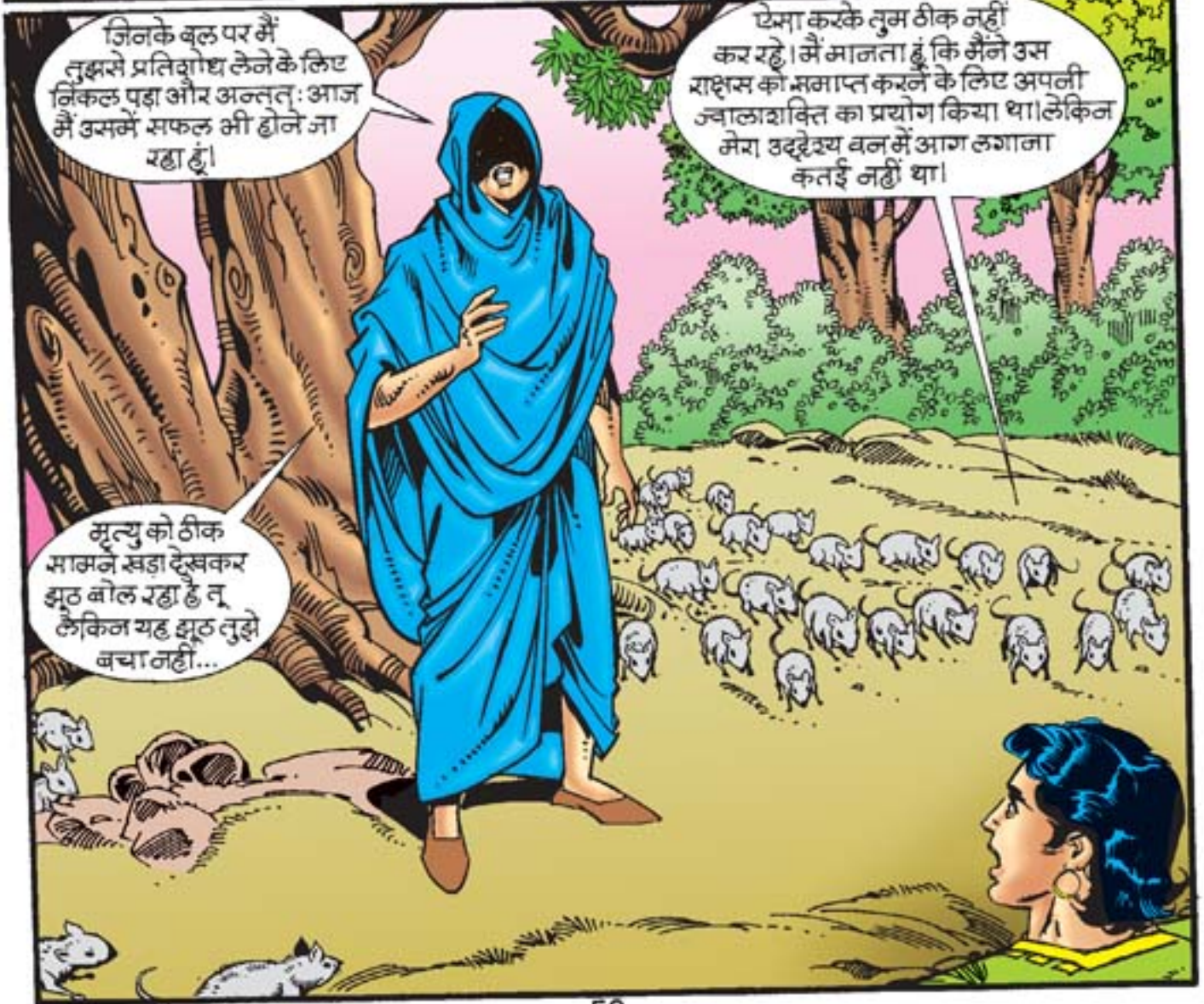


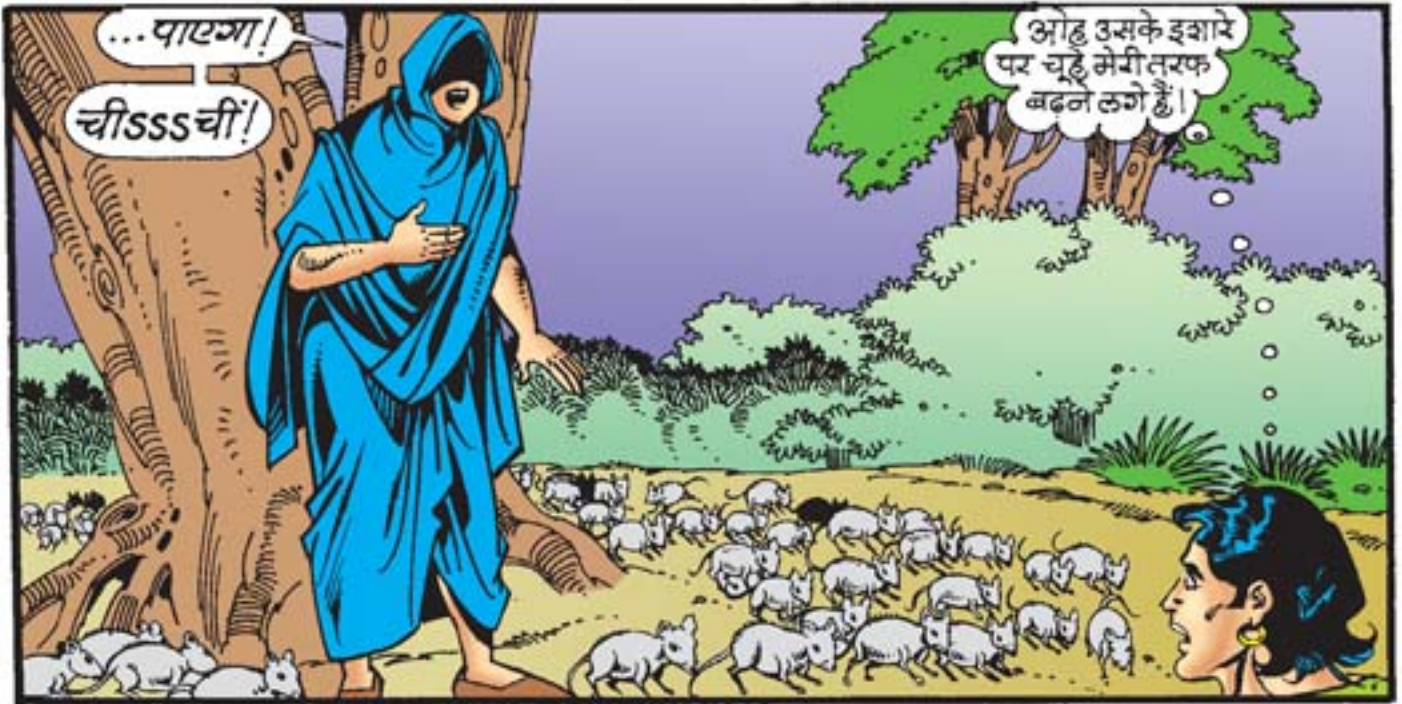
“अपनी विजय के जश्न में अंधा होकर तू यह नहीं देख सका कि तेरी ज्वालाशक्ति ने वन के उस भाग में वह आग लगा दी है जो वन्य प्राणियों के सबसे बड़े हितैषी और मेरे पालक ऋषि मंगेशाचार्य के आश्रम तक पहुँच गई है और उसने सारे आश्रम को अपनी चपेट में ले लिया है।”

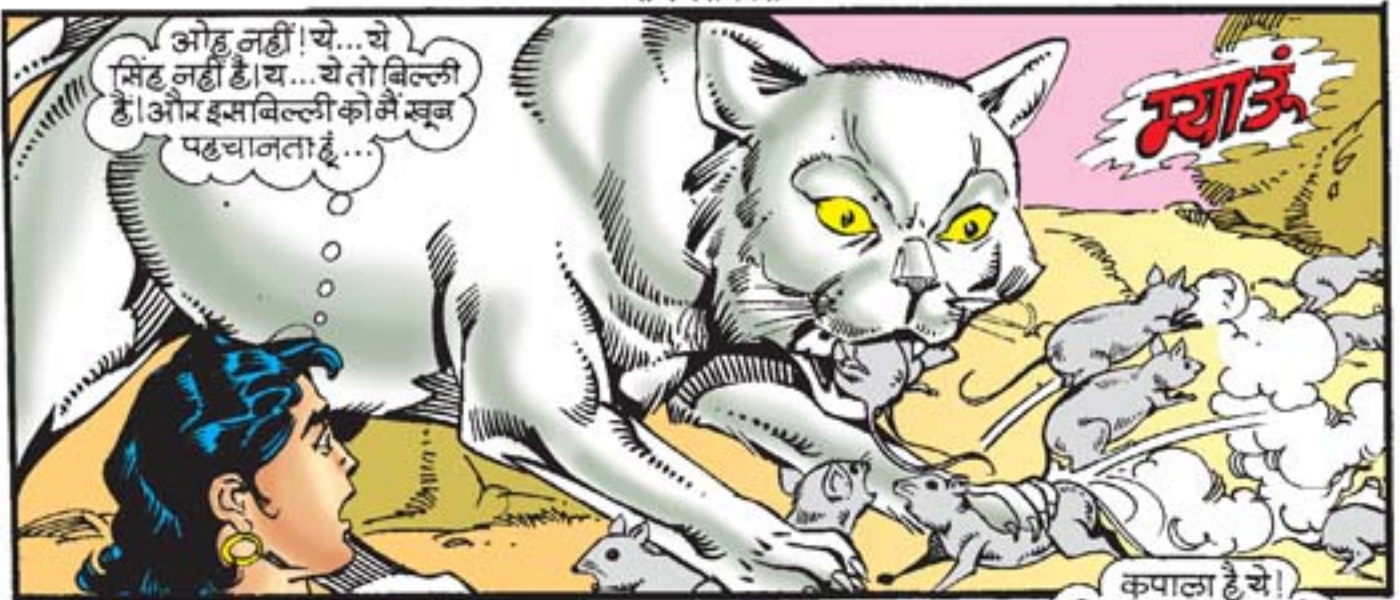


“उस दिन मैं कंदमूल इकट्ठे करने गया हुआ था। वापस लौटकर मैं सारी स्थिति देखकर दुःख की अधिकता से चीत्कार कर उठा।”











और उसे ठीक भोकाल के सामने फेंक दिया-

ओह! आपने अन्यायी भोकाल को बचाने के लिए मुझ पर प्रहार किया!



आपने ये अच्छा नहीं किया कपाला मां!

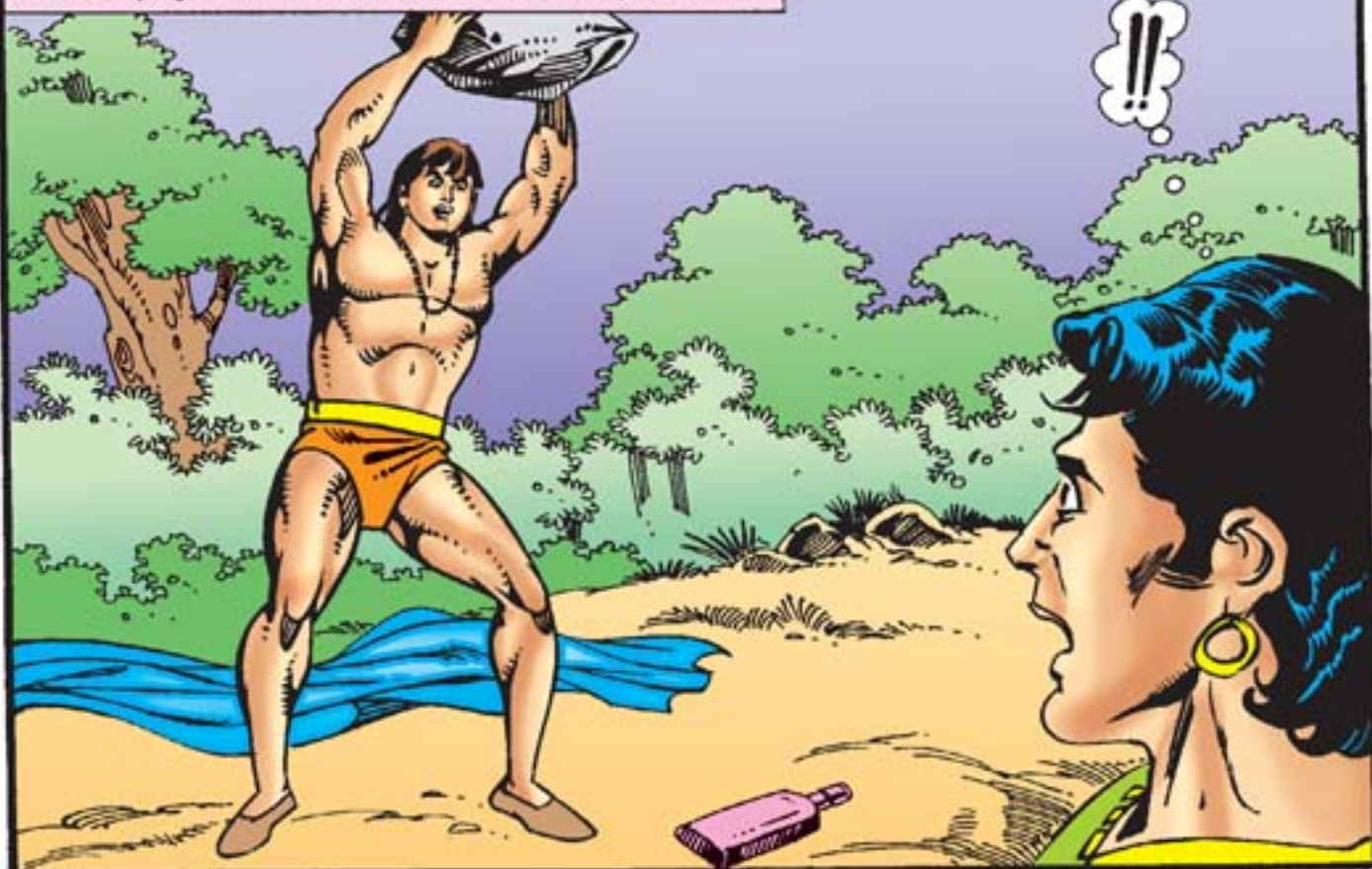


आप ऐसा करके भी भोकाल को समाप्त होने से नहीं बचा पाएंगी!



क्रोध से उबलते हुए उसने वह भारी चट्टान उठा ली...

...उसका इरादा भोकाल के सामने पड़ी शीशी को फोड़ देने का था-



लेकिन कपाला के विशाल मुँह ने उसे अपने इरादे में सफल नहीं होने दिया -

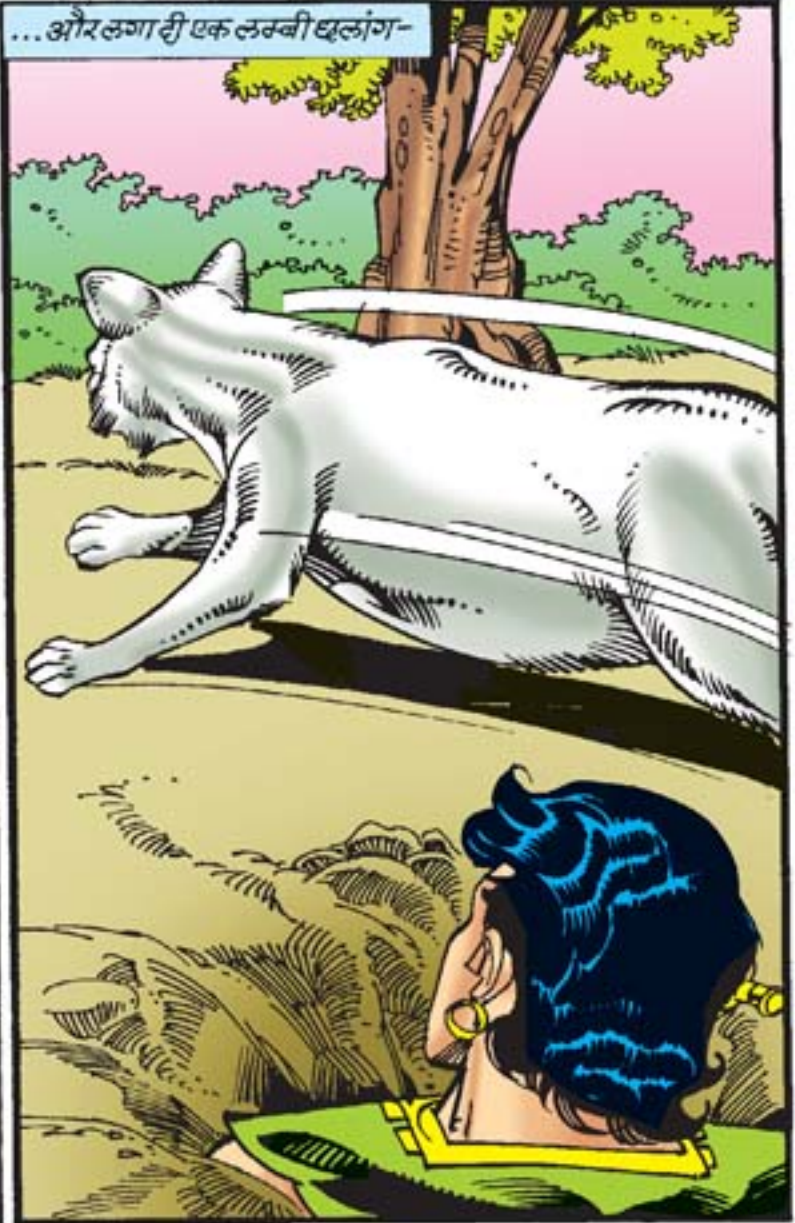


उसने उसे मुँह में दबाया -

...उसे निगला और...



...और लगा ही एक लम्बी धूलोंग -



अब दबाना न रह सका ओकाल-



बाहर निकलने के लिए छटपटा उठा वह-

ओकाल की छटपटाहट जल्दी ही रंग लाई-



लेकिन इसके बावजूद भी देर हो चुकी थी।

कपाला उसकी आंखों से ओझल हो चुकी थी-



ओफ्फ! चली गई।
कपाला एक बार फिर
चली गई।



